6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए: (6)

(क) संस्मरण

(ख) भारतेंदु युगीन निबंध

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5928 **H**

Unique Paper Code : 2055092001

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas ke Vividh Charan (A)

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

RAJANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) इसी भीड़ में एक खूबसूरत भोला-भाला लड़का एक छड़ी पर सवार होकर अपने पैरों पर उछल-उछल फर्जी घोड़ा दौड़ा रहा था, और अपनी सादगी की दुनिया में ऐसा मगन था कि जैसे

वह इस वक़्त सचमुच किसी अरबी घोड़े का शहसवार है। उसका चेहरा उस सच्ची खुशी से कमल की तरह खिला हुआ था जो चंद दिनों के लिए बचपन ही में हासिल है और जिसकी याद हमको मरते दम तक नहीं भूलती। उसका दिल अभी तक पाप की गर्द और धूल से अछूता था और मासूमियत उस अपनी गोद में खिला रही थी।

अथवा

दो दिन चिराग के घर की छानबीन होती रही थी । जब उसका सारा सामान लूटा जा चुका, तो न जाने किसने उस घर को आग लगा दी थी। रक्खे पहलवान ने तब कसम खायी थी कि वह आग लगाने वाले को जिंदा ज़मीन में गाड़ देगा, क्योंकि उस मकान पर नज़र रखकर ही उसने चिराग को मारने का निश्चय किया था। उसने उस मकान को शुद्ध करने के लिए हवन सामग्री

'मलबे का मालिक' कहानी की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

4. 'उत्साह' निबंध की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध में निहित उद्देश्य स्पष्ट कीजिये।

5. 'दीपदान' एकांकी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिये । (15)

अथवा

'भोलाराम का जीव' व्यंग्य का प्रतिपाद्य लिखिए ।

नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए । उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जाएगा ।''

2. एकांकी विधा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

कहानी के तत्व बताते हुए उनका विश्लेषण कीजिये ।

3. 'अनमोल रतन' कहानी का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। (15)

अथवा

भी ला रखी थी। मगर आग लगाने वाले का तबसे आज तक पता नहीं चल सका था। अब साढ़े सात साल से रक्खा उस मलबे को अपनी जायदाद समझता आ रहा था, जहाँ न वह किसी को गाय-भैंस बाँधने देता था और न ही खुमचा लगाने देता था। उस मलबे से बिना उसकी इज़ाज़त के कोई एक ईंट भी नहीं निकाल सकता था।

(ख) युद्ध के अतिरिक्त संसार में और भी ऐसे विकट काम होते हैं जिनमें घोर शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है और प्राण-हानि तक की संभावना रहती है। अनुसंधान के लिए तुषार मंडित अभ्रभेदी अगम्य पर्वतों की चढ़ाई, ध्रुव देश या सहारा के रेगिस्तान का सफ़र, क्रूर बर्बर जातियों के बीच अज्ञात घोर जंगलों में प्रवेश इत्यादि भी पूरी वीरता और पराक्रम के कर्म हैं। इनमें जिस आनंदपूर्ण तत्परता के साथ लोग प्रवृत्त हुए हैं, वह भी उत्साह ही है ।

अथवा

वह आचरण, जो धर्म-सम्प्रदायों के अनुच्चारित शब्दों को सुनाता है, हममें कहाँ! जब वही नहीं तब फिर क्यों न ये संप्रदाय हमारे [illegible] वत्रता, मानसिक महाभारतों के कुरुक्षेत्र बनें! क्यों न अप्रेम, अ[illegible] करें! हत्या और अत्याचार इन सम्प्रदायों के नाम से हमारा [illegible] कारक कोई भी धर्म-संप्रदाय आचरण-रहित पुरुषों के लिए कल्या[illegible] नहीं हो सकता; और आचरण वाले पुरुषों के लिए सभ[illegible] धर्म-संप्रदाय कल्याणकारक हैं। सच्चा साधु धर्म को गौरव देता है, धर्म किसी को गौरवान्वित नहीं करता ।

(ग) धाय माँ! पागल कौन नहीं है? महाराणा विक्रमादित्य अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल हैं। मल्ल-क्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराज बनवीर, महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता

से पागल हैं। वे विक्रमादित्य के अन्तःपुर में प्रलाप करते हैं। यह आनंद ही उनका पागलपन है। सारा नगर आज के त्यौहार में पागल है। तुम कुँवर उदयसिंह के स्नेह में पागल हो और मैं? ह्रहँसकर ऱ मेरी कुछ न पूछो धायमाँ! मैं तो इन सबके पागलपन में पागल हूँ।

अथवा

नारद उस बाबू के पास गए। उसने तीसरे के पास भेजा । तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास । जब नारद पचीस-तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आये, तब एक चपरासी ने कहा- ''महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए! आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम